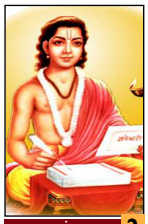

पृष्ठ संख्या 2

डाक पंजीयन संख्या- RJ/JPM/160/2024-26

RNI NO.- RAJHIN/2021/80841

संस्कार सृजन

हिन्दी पाक्षिक

सम्पादक: राम गोपाल सैनी
मो.: 9214996258

वर्ष: 03 | अंक: 8 | पृष्ठ : 4 | जयपुर, सोमवार 22 जुलाई, 2024 | मूल्य: 05 रू. | वार्षिक मूल्य : 150 रू.

बजट सौगातों के लिए लालसोट की जनता ने जताया मुख्यमंत्री का आभार

आठ करोड़ जनता के प्रति समर्पित हमारी सरकार : भजनलाल शर्मा

युवा, किसान, महिला, गरीब सहित सभी वर्गों को सशक्त बनाता बजट

जयपुर(नि.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के पहले ही बजट में प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में हर वर्ग को राहत देने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि हम केवल चुनावी घोषणा ही नहीं करेंगे बल्कि योजनाओं का धरातल पर क्रियान्वयन भी सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने आश्वस्त किया कि जिन कार्यों का शिलान्यास हम करेंगे उनका उद्घाटन भी हमारी सरकार द्वारा किया जाएगा। शर्मा शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास पर लालसोट विधानसभा क्षेत्र के निवासियों की आभार सभा को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का वर्ष 2024-25 का परिवर्तित बजट प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जिससे विकास का रोडमेप तैयार हो तथा विकसित राजस्थान संकल्प की सिद्धि की जा सके। हम 8 करोड़ जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए समर्पित होकर काम कर रहे हैं।

हम शिलान्यास भी करेंगे और उद्घाटन भी

लालसोट में बही विकास की बयार

शर्मा ने कहा कि लालसोट विधानसभा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए परिवर्तित बजट 2024-25, लेखानुदान एवं बजट रिप्लाई में कई महत्वपूर्ण घोषणाएं एवं प्रावधान किए गए हैं। इसके अन्तर्गत 5.10 करोड़ रूपये की लागत से लालसोट से खटवा नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण सड़क निर्माण, 5.49 करोड़ रूपये की लागत से एनएच 148 डूंगरपुर मोड से डोब वाया हरिपुरा नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण का निर्माण करवाया जाएगा। साथ ही, लालसोट में श्यामपुरा-दौसा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में क्रमोन्नत, राहूवास-दौसा में नवीन उपखंड कार्यालय खोलना, लालसोट-दौसा की नगर पालिका को नगर परिषद् में क्रमोन्नत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लालसोट-दौसा में एनिकट का निर्माण, मरम्मत एवं जीर्णोद्धार, रामगढ़ पचवारा-दौसा में कृषि मण्डी की स्थापना की जायेगी। इसके साथ ही 6 करोड़ 10 लाख रुपये लागत से नांगल मोड, देवली रोड (लालसोट बाईपास) नवीनीकरण एवं चौड़ाईकरण का कार्य तथा कन्या महाविद्यालय, लालसोट को यूजी से पीजी में क्रमोन्नत किया जायेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने श्रीनाथ जी मंदिर में किए दर्शन

प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की

डीग (संस्कार सृजन)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने डीग के पूंछरी का लौठा पहुंचकर गिरिराज जी की पूजा-अर्चना कर दुग्धाभिषेक किया। उन्होंने श्रीनाथजी मंदिर में भी विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना की एवं प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। शर्मा ने मुड़िया पूर्णिमा मेले के अवसर पर पूंछरी का लौठा में गोवर्धन परिक्रमा कर रहे श्रद्धालुओं से आत्मीय मुलाकात की एवं उन्हें भक्ति भाव से भोजन प्रसादी भी वितरित की। उल्लेखनीय है कि बजट 2024-25 में डीग-कुम्हेर-भरतपुर में 6 करोड़ 25 लाख रुपये की लागत से सांवई खेड़ा डिग्रेशन से गोवर्धन ड्रेन तक पानी लिफ्ट कार्य की घोषणा की गई है। इस सौगात के लिए क्षेत्रवासियों ने मुख्यमंत्री शर्मा का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस दौरान गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढम, विधायक डॉ. शैलेश सिंह, नौक्षम चौधरी, बहादुर सिंह कोली सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

शिव पार्थिव महारुद्राभिषेक कार्यक्रम के पोस्टर का हुआ विमोचन

चौमूं (संस्कार सृजन)। विराज फाउंडेशन के तत्वावधान में 11 अगस्त 2024, रविवार को कागलिया वाले बालाजी मंदिर, मोरीजा रोड, चौमूं पर शिव पार्थिव महारुद्राभिषेक एवं महाआरती कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन चौमूं थानाधिकारी प्रदीप शर्मा ने किया।

इस दौरान थानाधिकारी शर्मा ने कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजन होते रहने चाहिए जिससे लोगों में धर्म के प्रति आस्था बनी रहे।

इस अवसर पर प्रदेशाध्यक्ष भुवनेश तिवाडी, सुरेश चंद्र शर्मा, बनवारी लाल शर्मा, चंद्र प्रकाश शर्मा, ओम प्रकाश रीडर, एडवोकेट हेमेंद्र शर्मा, डॉ. सीताराम कुमावत, राकेश शर्मा, सुनीता शर्मा, सुमन शर्मा, मनीष शर्मा आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गायत्री प्रज्ञा पीठ संस्थान ने किया गेहूं का ट्रक रवाना

जयपुर (संस्कार सृजन)। शहर के राधाबाग स्थित गायत्री प्रज्ञा पीठ संस्थान पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शांतिकुंज हरिद्वार के माता भगवती भोजनालय के लिए गेहूं का पहला ट्रक रवाना किया गया। जिस हेतु सभी परिजनों ने अपना अनुदान के रूप में अंशदान प्रदान किया। शांतिकुंज के आश्रम वाहन को रवाना करने से पूर्व सभी भामाशाहों का तिलक लगाकर एवं मोली बांधकर स्वस्ति वाचन किया गया। गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्ता गजेंद्र सिंह बीजावत एवं सांवरमल अग्रवाल द्वारा सभी भामाशाहों का गायत्री मंत्र का दुपट्टा पहना कर अभिनंदन किया गया। समारोह में गायत्री परिवार मिशन के प्रज्ञा गीतों को वाद्य यंत्रों के साथ गाया गया। इस अवसर पर चौमूं थानाधिकारी प्रदीप शर्मा का सपत्नी व मुख्य अधिशासी अभियंता के. के. पारीक एवं इंचार्ज उपजिला चिकित्सालय चौमूं डॉ .सुरेश जांगिड़ और डॉ. जे पी सैनी का दुपट्टा पहनाकर अभिवादन किया गया। गायत्री परिवार ट्रस्ट के सचिव राजकुमार शर्मा ने बताया की परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा स्थापित शांतिकुंज हरिद्वार में प्रतिदिन साधक गण साधनाएं करते है, वही पर नव दिवसीय सत्र, एक मासीय सत्र चलते रहते है। विचार क्रांति अभियान के तहत गुरुदेव के तपोबल से गायत्री परिवार व्यापक रूप से विस्तार होता जा रहा है। ऐसे में एक छोटे से प्रयास के माध्यम से आप सभी परिजनों ने माता भगवती भोजनालय के लिए अपनी मेहनत की कमाई का एक अंश अन्नदान के रूप दिया। जिसके लिए आप और हम सभी को गुरुदेव का आशीर्वाद निश्चित रूप से कई गुना मिलेगा।

वहीं ट्रस्ट उपाध्यक्ष एड. जितेंद्र सिंह बीजावत ने सभी को बताया कि इस बार पहला ट्रक 4 लाख 59 हजार रुपए की राशि से 400 कट्टे भेजे रहे है । कुछ समय के बाद ही जल्द ही दूसरा गेंहू का ट्रक रवाना किया जायेगा।

कार्यक्रम के पश्चात शांतिकुंज हरिद्वार के प्रतिनिधि माधव का सभी सम्मानित करते हुए विदाई दी और सभी परिजनों की ओर से नारे लगाते हुए, मिशन की झंडी देते हुए आश्रम वाहन को रवाना किया।

अजंता वर्ल्ड सेकेंडरी स्कूल में हुआ पौधारोपण कार्यक्रम

जयपुर (संस्कार सृजन)। चौमूं शहर के गिरिराज नगर स्थित अजंता वर्ल्ड सेकेंडरी स्कूल में बारिश के मौसम में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

इस दौरान चौमूं थाना के सब इंस्पेक्टर जालिम सिंह, सीएलजी मेंबर प्रेम सिंह सोलंकी,संस्था निदेशक डॉक्टर मालीराम यादव एवं प्रधानाचार्य संगीता तिवारी ने पौधारोपण कर सभी को पेड़ लगाने का सन्देश दिया। स्कूल के शिक्षकों और स्टूडेंट्स ने पेड़ लगाकर, देखभाल और सुरक्षा का संकल्प लिया ।

राजस्थान पुलिस सेवा नियम में ओबीसी के लिए आयु सीमा में 5 साल की छूट का प्रावधान यथावत

जयपुर (संस्कार सृजन)। राजस्थान पुलिस सेवा नियम में अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए 5 वर्ष की छूट यथावत है। अधिसूचना जारी करते समय 5 वर्ष की छूट का प्रावधान भूलवश दो स्थानों पर अंकित हो जाने पर इसे संशोधित कर एक स्थान से हटाया गया है। इससे राजस्थान पुलिस सेवा नियमों में ओबीसी के लिए आयु की छूट पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। कार्मिक विभाग के संयुक्त शासन सचिव दिनेश शर्मा ने बताया कि कार्मिक विभाग की अधिसूचना 13 नवम्बर 1996 द्वारा राजस्थान पुलिस सेवा नियम, 1954 में ओ.बी.सी वर्ग को ऊपरी आयु सीमा में प्रथम बार दो वर्ष की छूट प्रदान की गई थी। इसके पश्चात अधिसूचना 25 मई 2000 द्वारा आयु सीमा में 05 वर्ष की अभिवृद्धि का प्रावधान जोड़ा गया था।

उन्होंने बताया कि 16 अप्रेल 2021 को अधिसूचना जारी कर विविध सेवा नियमों में संशोधन के समान ही राजस्थान पुलिस सेवा नियम, 1954 में भी ओ.बी.सी. वर्ग हेतु बी.सी. अंकित कर ऊपरी आयु सीमा में 5 वर्ष की छूट का प्रावधान जोड दिया गया। परन्तु अधिसूचना जारी करते समय ओ.बी.सी. वर्ग के लिए ऊपरी आयु सीमा में 05 वर्ष की छूट का प्रावधान नियम 11 (1) के परंतुक (iii) एवं परन्तुक (&vii) दोनों में विद्यमान रह गया।

संयुक्त शासन सचिव ने बताया कि परन्तुक (&vii) को विलोपित किये जाने के लिए राजस्थान पुलिस सेवा नियम, 1954 में संशोधन किया गया है।

संपादकीय

सैनिकों का बलिदान व्यर्थ न जावे

ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। लगातार जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही आतंकी घटनाएं चिन्ता का कारण बन रही है। डोडा जिले में एक आतंकी हमले में कैप्टन समेत सेना के चार जवानों और जम्मू कश्मीर के एक पुलिसकर्मी का बलिदान अब यही दर्शा रहा है कि शांति एवं अमन की ओर लौटा जम्मू-कश्मीर एक बार फिर आतंकवादी आघातकारी घटनाओं की भेंट चढ़ रहा है, इन घटनाओं का माकूल जबाव नहीं दिया गया तो यह घाटी एक बार फिर खूनी घाटी बन जायेगी। क्योंकि कुछ ही दिनों पहले कठुआ में एक सैन्य अफसर सहित पांच जवान आतंकियों का निशाना बन गए थे। इसके पहले भी जम्मू संभाग में ही सेना के कई जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दे चुके हैं। ये बहुत चिंतित करने वाले त्रासद एवं घिनौने घटनाक्रम हैं कि पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग में भी आतंकियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। हाल की कुछ घटनाओं से तो यह भी लगता है कि आतंकियों ने जम्मू संभाग को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना लिया है। एक ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की तैयारी हो रही है, तब आतंकियों का सक्रिय होना और सफलतापूर्वक अपने मनसूबों को कामयाब करना गंभीर चिंता का विषय है।ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं सेना की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे प्रांत की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं, हमारी संवेदनाओं को झकझोर सकते हैं। संवेदनाओं एवं भावनाओं को झकझोर भी रहे हैं, जब आतंकवादी हमलों में शहीद जवानों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे घर की ड्योढ़ी पर आते हैं तब कारुणिक माहौल को देखकर दिल दहल उठता है क्योंकि देश के लिए अपना सर्वोच्च लुटा देने वाला जवान किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता होता है। हर आंख में आंसू होते हैं। किसी की गोद, किसी की मांग सूनी हो जाती है। देशवासी सोचने को विवश हैं कि वे शोक संप्तत परिवार के साथ करुणा और पीड़ा को कैसे बांटें।डोडा वारदात की जिम्मेदारी लेने वाले 'कश्मीर टाइगर्स' जैसे आतंकी संगठनों की ताजा बौखलाहट की एक बड़ी वजह जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया की बहाली को लेकर बढ़ी सरगर्मी है।

कैसे चेक करेंगे, हीरा आपको सूट कर रहा है या नहीं

हीरा पहनना किसकी चाहत नहीं होती। लेकिन कुछ रत्न ज्योतिष से सलाह लेकर ही पहनने चाहिए, जिससे ये आपकी कुंडली में उन ग्रहों को मजबूत करें। इसके अलावा पहनने के बाद आपको पता होना चाहिए कि यह हमें सूट कर रहा है या नहीं, इसको कैसे पहचानें

हीरा पहनना किसकी चाहत नहीं होती। लेकिन कुछ रत्न ज्योतिष से सलाह लेकर ही पहनने चाहिए, जिससे ये आपकी कुंडली में उन ग्रहों को मजबूत करें। इसके अलावा पहनने के बाद आपको पता होना चाहिए कि यह हमें सूट कर रहा है या नहीं, इसको कैसे पहचानें। सबसे पहले किस राशि को इसे पहनना चाहिए और किस ग्रह के लिए इसे पहनाया जाता है, वो जान लें

किस राशि को पहनना चाहिए और किसे नहीं

ज्योतिष शास्त्र में हीरे का संबंध धन-संपदा व वैभव के कारक शुक्रदेव से माना गया है। आपको बता दें कि मेष कर्क, सिंह, वृश्चिक मीन राशि वालों को हीरा नहीं पहनना चाहिए। इसके उलट हीरा कन्या और तुला राशि वालों के लिए रत्न है क्योंकि यह सौभाग्य और समृद्धि प्रदान करता है।

कैसे चेक करेंगे कि हीरा आपको सूट कर रहा है या नहीं सबसे पहले ये जान लें कि स्टेट्स के लिए या फिर किसी को दिखावा करने के लिए हीरा पहन रहे हैं, तो ऐसा बिल्कुल भी न करें। इससे आपको नुकसान होगा। 21 साल के बाद हीरा पहनना चाहिए। अगर हीरा पहन लिया और चेक करना चाहते हैं कि हीरा आपको सूट कर रहा है या नहीं। इसके लिए अगर शादीशुदा लाइफ में दिक्कतें आती हैं, तो हीरा पहनने से बचना चाहिए। यह अपने प्रभाव 20-25 दिन में दिखाने लगता है और इस दौरान आपके साथ कुछ घटित होता है, तो समझ लें कि हरा आपको सूट नहीं कर रहा है। आपको बता दें कि हीरा कभी खराब नहीं होता, इसकी वैलिडिटी आजीवन होती है।हीरा अगर मेष राशि लें को किसी बीमारी का शिकार हो सकते हैं।

अमूल्य ज्ञान का बोध

❋ सोलह संस्कार

1.गर्भाधान संस्कार 2. पुंसवन संस्कार 3. सीमन्तोन्नयन संस्कार 4. जातकर्म संस्कार 5. नामकरण संस्कार 6.निष्क्रमण संस्कार 7. अन्नप्राशन संस्कार 8. मुंडन संस्कार 9. कर्णवेधन संस्कार 10. यज्ञोपवीत संस्कार 11. वेदारंभ संस्कार 12. केशांत संस्कार 13. समावर्तन संस्कार 14. विवाह संस्कार 15. सन्यास संस्कार 16. अन्त्येष्टि संस्कार

❋ अष्ट सिद्धि

1.अणिमा 2. महिमा 3. गरिमा 4. लघिमा . 5.प्राप्ति 6. प्राकाम्य 7. ईशित्व 8. वशित्व

❋ नव निधियां

1.पद्म निधि 2. महापद्म निधि 3. नील 4. मुकुंद निधि 5. नंद निधि 6.मकर निधि 7. कच्छप निधि 8. शंख निधि 9. खर्व निधि

❋ 27 नक्षत्र

1.आश्विन, 2.भरणी, 3.कृतिका, 4.रोहिणी, 5.मृगशिरा, 6.आर्द्रा 7.पुनर्वसु, 8.पुष्य, 9.आश्लेषा, 10.मघा, 11.पूर्वा फाल्गुनी, 12.उत्तरा फाल्गुनी, 13.हस्त, 14.चित्रा, 15.स्वाति, 16.विशाखा, 1।.अनुराधा, 18.ज्येष्ठा, 19.मूल, 20.पूर्वाषाढ़ा, 21.उत्तराषाढ़ा, 22.श्रवण, 23.धनिष्ठा, 24.शतभिषा, 25.पूर्वा भाद्रपद, 26.उत्तरा भाद्रपद और 27.रेवती

❋ 12 राशियाँ

1. मेष 2. वृषभ 3. मिथुन 4. कर्क 5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक 9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12.मीन

❋ नवग्रह

1.सूर्य 2.चंद्र 3.मंगल 4.बुध 5.बृहस्पति 6.शुक्र 7.शनि 8.राहू 9.केतु

❋ चार वेद

1.ऋग्वेद 2.यजुर्वेद 3.सामवेद 4.अथर्ववेद

❋ सप्त ऋषि

1.वशिष्ठ 2.विश्वामित्र 3.कण्व 4.भारद्वाज 5.अत्रि 6.वामदेव 7.शौनक

❋ 18 पुराण

1.ब्रह्म पुराण 2.पद्म पुराण 3.विष्णु पुराण 4. वायु पुराण (शिव पुराण)5.भागवत पुराण 6.नारद पुराण 7. मार्कण्डेय पुराण 8.अग्नि पुराण 9.भविष्य पुराण 10.ब्रह्मवैवर्त पुराण 11.लिंग पुराण 12.वाराह पुराण 13.स्कन्द पुराण 14.वामन पुराण 15.कूर्म पुराण 16.मत्स्य पुराण 17.गरुड़ पुराण 18.ब्रह्माण्ड पुराण

❋ सोलह श्रृंगार

1.बिंदी, 2. सिंदूर, 3. काजल, 4. मेहन्दी, 5. चूड़ियाँ, 6. मंगल सूत्र, 7. नथ, 8. गजरा, 9. मांग टीका, 10. झुमके, 11. बाजूबंद, 12. कमरबंद, 13. बिछिया, 14. पायल, 15. अंगूठी, 16. स्नान

गुरु के प्रति आभार व्यक्त करने का दिन

जैसे एक छोटा बच्चा अपनी मां के लिए तड़प जाता है, ऐसे ही हर गुरु पूर्णिमा पर एक शिष्य का मन अपने गुरु के लिए तड़प उठता है। भाव, प्रेम और श्रद्धा का सागर उसके अंदर हिलोरें ले रहा होता है। धन्यवाद के भावों का सागर उसके अंदर उमड़ रहा होता है।दव्यास पूजा अथवा गुरु पूर्णिमा सभी साधकों के, शिष्यों के जीवन काल में एक ऐसा अद्भुत पर्व होता है, जब वे अपने गुरु को अपना प्रेम, अपना समर्पण, अपनी भावनाएं, अपना अहोभाव, अपना सर्वस्व अर्पित करते हैं। इस विश्व के सर्वप्रथम गुरु तो महादेव ही हैं। ज्ञान की यह परंपरा महादेव से शुरू हुई। फिर ऋषि वेदव्यास ने पूरे भारत में घूम-घूमकर ऋषियों को तैयार किया। आचार्यों को तैयार किया कि तुम अपने-अपने क्षेत्र में इस ज्ञान को प्रसारित करो, प्रचारित करो। इसलिए गुरु पूर्णिमा का दिन ऋषि वेदव्यास का दिन है। आज के दिन हम ऋषि वेदव्यास को स्मरण करते हैं और आज तक गुरु पदवी पर आसीन जितने ऋषि हुए हैं, जितने योगी हुए हैं, आज के दिन हम उन सबको स्मरण करते हैं। हम नतमस्तक होते हैं और उनसे याचना करते हैं, आशीर्वाद मांगते हैं कि हम भी एक ऋषि हो सकें। हम देह के भोग और मन के झूठे गर्व तथा अभिमान में चूर होकर मानव जीवन का नाश न कर लें। हम इस जीवन को सार्थक कर सकें।यह पर्व गुरु के संग जुड़े हुए अपने रिश्तों को याद कराता है। यह साधक को स्मरण कराता है कि क्या मैंने ईमानदारी से एक अच्छा शिष्य होने का कर्तव्य निभाया या नहीं? क्या मैंने अपने जीवन में गुरु के वचन का पालन किया या मोह-आलस्य में सोकर, विषयों के पीछे भागकर, ममता में पड़कर, महत्त्वाकांक्षा की आग में खुद को जलाकर, अस्थिर संसार को स्थिर समझकर उससे दोस्ती बना ली? देखो, विचारो, तुम कहां खड़े हो? जिसने अपना जीवन साधना को समर्पित किया है, वह हमेशा अपने पर दृष्टि रखता है कि हर रात सोने से पहले मैं ध्यान में गया, मैं सुबह फिर से उठा और फिर से अपनी साधना को पूर्ण किया। वह किसी को सताता नहीं, किसी को पीड़ा नहीं देता, वाणी से, विचार से, कर्म से किसी को आहत नहीं करता और एक निरंतर जागरूकता उसके भीतर बनी रहती है कि यह जीवन सिर्फ भौतिक सुखों को इकट्ठा करने और उसको भोगने के लिए नहीं मिला है। जीवन आत्मज्ञान के लिए मिला हुआ एक सुंदर और शुभ अवसर है। प्रतिदिन अपनी साधना को बढ़ाते जाओ, अपने संयम को और पक्का करते जाओ, अपने अनुशासन को और अच्छा बनाओ।यह पर्व प्रार्थना का दिन है। यह सदगुरु से याचना का दिन है। माया विशिष्ट चैतन्य ईश्वर के आगे पुन एक प्रार्थना लगाने का दिन है कि हे प्रभु! हे गुरुदेव! हमारे इस साधना मार्ग में कोई विघ्न न आ जाए। शिष्य प्रार्थना भी करता है और संकल्प से साधना भी करता है।

यह महीना अपने भीतर जाने और शिव तत्व से मिलने का समय है सावन

संस्कृत में श्रवण का अर्थ है— 'सुनना।' यह हमारे जीवन में ज्ञान को एकीकृत करने का पहला कदम है। हम सुनते हैं (श्रवण), फिर हम बार-बार उसे याद करते हैं (मनन) और फिर ज्ञान हमारे जीवन में एक संपदा के रूप में एकीकृत (निदिध्यासन) हो जाता है।यह महीना अपने बड़ों की बात सुनने, ज्ञान की बातें सुनने और ज्ञान में रहने का समय है। इस महीने में पार्वती ने शिव की पूजा की थी। शिव को पाने के लिए उन्होंने तपस्या की थी। यह महीना अपने भीतर जाने और अपने भीतर शिव तत्व (शिव सिद्धांत) से मिलने का समय है।

पार्वती शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। शक्ति का अर्थ है– ताकत और ऊर्जा। शक्ति समस्त सृष्टि का गर्भ है और इसलिए इसे ईश्वर के मातृ रूप में व्यक्त किया जाता है। शक्ति सभी प्रकार की गतिशीलता, चमक, सुंदरता, समता, शांति और पोषण का बीज है। शक्ति वास्तव में जीवन शक्ति है।

शक्ति गतिशीलता की अभिव्यक्ति है। शिव तत्त्व अवर्णनीय है। आप हवा को बहते हुए, पेड़ों को झूमते हुए देख सकते हैं, लेकिन आप स्थिरता को नहीं देख सकते, जो सभी गतिविधियों के लिए संदर्भ बिंदु है। स्थिरता और शांति शिव हैं। दोनों आवश्यक हैं। जब गतिशील अभिव्यक्ति को भीतर की स्थिरता के साथ जोड़ा जाता है, तो रचनात्मकता, सकारात्मकता होती है और सत्व उत्पन्न होता है।

एक समय था, जब शक्ति भी तप में थीं। तीर चलाने

के लिए पहले उसे पीछे की ओर खींचना पड़ता है। श्रावण मास वह निवृत्ति काल है, जब शक्ति भी भीतर की ओर जाती है। इस तप से आत्मा की बेचैनी शांत होती है।

जीवन में हर जगह विरोधाभास है, विपरीत चीजें एक साथ मौजूद हैं। गर्मी और सर्दी, पहाड़ और घाटी– ऐसे कई उदाहरण हैं। यही विरोधाभास जीवन में रस भरता है। शिव और पार्वती स्वयं प्रकाशवान हैं और दूसरों के लिए मार्गदर्शक प्रकाश हैं। पार्वती प्रेम, सादगी, देखभाल और सबको साथ लेकर चलने की प्रतिमूर्ति हैं। वे एक आदर्श बेटी, पत्नी और मां हैं। वे दाम्पत्य जीवन के लिए मील का पत्थर हैं।

पर्व का अर्थ है— उत्सव; सत्व से उत्पन्न उत्सवमय पहलू। जब तमोगुण हावी होता है तो सिर्फ जड़ता रहती है, उत्सव नहीं। रजोगुण से उत्पन्न कोई भी उत्सव टिक नहीं सकता। केवल सत्व में ही हम निरंतर उत्सव मना सकते हैं। शिव मन, विचार, वाणी और कर्म की शुद्धता के साथ उत्सव के आदिपति हैं। शाश्वत उत्सव पार्वती का प्रतिनिधित्व है। शाश्वत शांति शिव है। वे कई जीवन का मार्गदर्शन करने वाले एक अनुकरणीय युगल हैं। उन्हें युगल भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि वे वास्तव में एक हैं। 'जगतः पितरौ वंदे पार्वतीपरमेश्वरौ।' उन्हें इस सृष्टि के माता-पिता के रूप में पूजा जाता है। 'पा' मूल शब्द है– जो परब्रह्म, परमात्मा को संदर्भित करता है। 'पा' पार्वती और परमेश्वर के लिए मूल है।

जब आप अपने भीतर जाते हैं, जब आप अपने आप में स्थापित होते हैं, तो आपके चारों ओर उत्सव होता है। श्रावण अपने भीतर जाकर उत्सव मनाने का महीना है। यह महीना त्योहारों से भरा है। उत्साह के बिना प्रेम और आनंद भी निष्क्रिय है। उत्साह पार्वती हैं। शिव शांत स्थिरता हैं। जब उत्सव का पहलू प्रेम, आनंद और ज्ञान के साथ जुड़ता है तो वह जीवन का चरम होता है।

धर्म दर्शन

पाक्षिक राशिफल

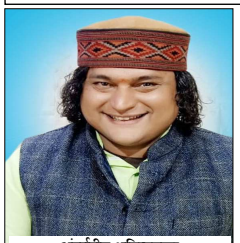

अंतर्राष्ट्रीय भविष्यवक्ता
पंडित रविन्द्राचार्य

मेष - वाणी में कठोरता के भाव रहेंगे, बातचीत में संयत रहें। माता से विचारों में मतभेद हो सकते हैं। संचित धन में वृद्धि होगी, नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। वाहन सुख में वृद्धि होगी। स्थान परिवर्तन संभव है।

वृषभ - कारोबार के विस्तार की योजना साकार होगी, भाईयों का सहयोग मिलेगा। घर-परिवार में मांगलिक कार्य होंगे। आयात-निर्यात कारोबार में लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। माता का सानिध्य मिलेगा।

मिथुन - आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, लेकिन आत्म संयत रहें। आलस्य की अधिकता रहेगी। जीवन साथी से मनमुटाव हो सकता है। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन संभव है। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा।

कर्क - मन में निराशा व असंतोष के भाव रहेंगे, आत्म विश्वास में कमी रहेगी। पठन-पाठन में रुचि रहेगी, पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। नौकरी में तरक्की के अवसर मिलेंगे, संपत्ति का विस्तार हो सकता है।

सिंह - आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहेंगे, अध्ययन में रूचि रहेगी। जीवनसाथी को स्वास्थ्य विकार हो सकता है, चिकित्सा कार्यों में खर्च बढ़ सकते हैं। नौकरी में परिवर्तन की संभावना बन रही है।

कन्या - अपनी भावनाओं को वश में रखें, आत्मविश्वास में कमी आएगी। क्रोध के अतिरेक से बचें, पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती है। कुटुम्ब के किसी बुजुर्ग से धनलाभ हो सकता है, परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं।

तुला - धैर्यशीलता में कमी आएगी, आत्म संयत रहें। वाणी का प्रभाव बढ़ेगा, किसी धार्मिक सत्संगी कार्यक्रम में जाना हो सकता है। मीठे खान-पान की ओर रूझान बढ़ेगा। संपत्ति से आय में बढ़ोत्तरी हो सकती है। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा।

वृश्चिक - आत्मविश्वास में कमी आएगी, शांत रहें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। संचित धन में कमी आएगी, लेखनादि, बौद्धिक कार्यों से धनार्जन हो सकता है। कला व संगीत में रुचि बढ़ेगी।

धनु - मन में प्रसन्नता के भाव तो रहेंगे, फिर भी आत्म संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें, माता से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। नौकरी में किसी दूसरे स्थान पर जाना हो सकता है, आय में वृद्धि होगी।

मकर - धैर्यशीलता में कमी रहेगी, आत्म संयत रहें, शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकता है। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार विस्तार होगा, लाभ के अवसर मिलेंगे। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कार्यक्षेत्र में परिश्रम की अधिकता रहेगी।

कुंभ - कार्यों के प्रति उत्साह रहेगा, परंतु बातचीत में संतुलित रहें। मन अशांत रहेगा, धर्म-कर्म के प्रति रूझान बढ़ेगा। पिता को स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं, माता का सहयोग मिलेगा। बौद्धिक कार्यों से धनार्जन होगा, नौकरी में स्थान परिवर्तन की संभावना बन रही है।

मीन - आत्मविश्वास में कमी रहेगी लेकिन परिवार का सहयोग मिलेगा। किसी धार्मिक स्थान की यात्रा पर जाना हो सकता है। खान-पान के प्रति सचेत रहें, स्वास्थ्य में गड़बड़ी हो सकती है। किसी पुराने मित्र के सहयोग से रोजगार के अवसर मिल सकते हैं।

ज्ञान गंगा-बड़े विरक्त मन से भगवान शंकर ने श्रीसती जी को यज्ञ में जाने की आज्ञा दी

भगवान शंकर के वचनों को भला कहाँ असत्य सिद्ध होना था। भगवान शंकर ने जब कहा था, कि पिता के यहाँ बिना बुलाये जाने से कल्याण नहीं होगा, और साथ ही शील-स्नेह व मान मर्यादा भी नहीं रहेगी, तो ऐसा तो होकर रहना ही था।

भगवान शंकर देख रहे हैं, कि श्रीसती जी के मन में, अपने पिता के गृह भवन में किये जा रहे, यज्ञ आयोजन में अति रुचि है। वहाँ जाना भोलेनाथ को अप्रिय भी नहीं था। कारण कि यज्ञ में जाने से तो भगवान शंकर को प्रसन्नता ही होनी थी। किंतु तब भी भगवान शंकर, श्रीसती को, पिता दक्ष के यज्ञ में जाने से मना ही कर रहे थे। कारण इसके पीछे यह था, कि प्रजापति दक्ष उस यज्ञ आयोजन में अपने भक्ति भावों का नहीं, अपितु अपने अहंकारी तरंगों का प्रदर्शन करने में रुचिकर थे। ऐसे में वहाँ जाने से कष्ट ही होना था। हालाँकि भगवान शंकर एक वाक्य यह भी कहते हैं-

'जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा।
जाइअ बिनु बोलहुँ न संदेहा।।
तदपि बिरोध मान जहँ कोई।
तहाँ गएँ कल्यानु न होई।।'

अर्थात हे सती! यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं, कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना बुलाये भी चले जाना चाहिए। किंतु तब भी जहाँ कहीं जाने से कोई विरोध मानता हो, वहाँ जाने से कल्याण नहीं होता है। भगवान शंकर ने सोचा, कि सती को मेरे किसी वचनों से चोट भी न पहुँचे, और वे आने वाले कष्टों से भी बच जाये। किंतु श्रीसती जी के हृदय में किंचित भी बोध नहीं हो रहा था। श्रीसती जी के मन में एक बार भी यह भय उत्पन्न नहीं हुआ, कि अपनी मनमानी के फेर में वह पहले ही महादेव की दृष्टि में अपात्रता झेल रही हैं। यह तो उनकी कृपा थी, कि भगवान शंकर अभी भी उसे कटाक्ष भरे वचन न बोल कर, कथा प्रसंगों के माध्यम से ही समझा रहे थे। किंतु श्रीसती जी थी, कि बस एक ही रट लगाये बैठी थी, वह यह, कि उन्हें अपने पिता के यज्ञ में जाना ही जाना है। बहुत प्रकार से समझाने पर भी दक्ष कन्या जब नहीं मानी, तो भगवान शंकर ने बड़े विरक्त मन से सती को यज्ञ में जाने की आज्ञा दी। किंतु साथ में अपने मुख्य गणों को भेज दिया।भगवान शंकर के वचनों को भला कहाँ असत्य सिद्ध होना था। भगवान शंकर ने जब कहा था, कि पिता के यहाँ बिना बुलाये जाने से कल्याण नहीं होगा, और साथ ही शील-स्नेह व मान मर्यादा भी नहीं रहेगी, तो ऐसा तो होकर रहना ही था। क्योंकि श्रीसती जी ने जैसे ही अपने पिता के महलों में कदम रखा, तो निश्चित ही उनका भव्य स्वागत होना चाहिए था। किंतु दक्ष के भय के मारे, किसी ने भी श्रीसती जी का स्वागत न किया। केवल माता ही थी, जो श्रीसती जी से गले लिपट कर मिली। बहनें भी आकर खूब हँसकर मिली।

किंतु प्रजापति दक्ष के समक्ष जैसे ही श्रीसती जी पड़ी, तो दक्ष ने उनसे बात तक नहीं की। अपना मुख दूसरी ओर मोड़ लिया, और क्रोध के मारे प्रजापति दक्ष के अंग-अंग फड़कने लगे। श्रीसती जी को भले ही यह अच्छा नहीं लगा, किंतु पिता होने के नाते श्रीसती जी ने इसे अपने दिल पर नहीं लिया।

श्रीसती जी ने सोचा, कि जाकर यज्ञ स्थल देखा जाये। किसी भी यज्ञ में त्रिदेवों का भाग तो निश्चित ही होता है। किंतु पिता के यज्ञ में इस महान मर्यादा का बड़ी फूहड़ता से प्रदर्शन किया गया था। जी हाँ! श्रीसती जी का, यह देख कर कलेजा सड़ भुन गया, कि यज्ञ में तो भगवान शंकर का भाग ही नहीं रखा गया था-

'सतीं जाइ देखेउ तब जागा।
कतहूँ न दीख संभु कर भागा।।'

भगवान शंकर का यज्ञ भाग न देख, श्रीसती जी को अपने स्वामी का अपमान समझ आया। उन्हें तब समझ आया, कि भगवान शंकर क्यों उसे यहाँ आने से रोक रहे थे। किंतु अब तो तीर कमान से छूट कर बहुत आगे जा चुका था। पिछली बार जब भोले नाथ ने श्रीसती जी को त्यागा था, तो वह दुख भी इतना कष्ट नहीं पहुँचा रहा था, जितना कि अब पति के अपमान का कष्ट हो रहा है।

(कहानी)वानरराज का बदला

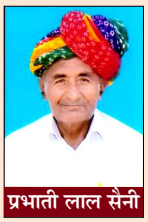

प्रभाती लाल सैनी

एक नगर के राजा चन्द्र के पुत्रों को बन्दरों से खेलने का व्यसन था। बन्दरों का सरदार भी बड़ा चतुर था। वह सब बन्दरों को नीतिशास्त्र पढ़ाया करता था। सब बन्दर उसकी आज्ञा का पालन करते थे। राजपुत्र भी उन बन्दरों के सरदार वानरराज को बहुत मानते थे। उसी नगर के राजगृह में छोटे राजपुत्र के वाहन के लिये कई मेढे भी थे। उन में से एक मेढा बहुत लोभी था। वह जब जी चाहे तब रसोई में घुस कर सब कुछ खा लेता था। रसोइए उसे लकड़ी से मार कर बाहर निकाल देते थे। वानरराज ने जब यह कलह देखा तो वह चिन्तित हो गया। उसने सोचा 'यह कलह किसी दिन सारे बन्दर समाज के नाश का कारण हो जाएगा कारण यह कि जिस दिन कोई नौकर इस मेढ़े को जलती लकड़ी से मारेगा, उसी दिन यह मेढा घुड़साल में घुस कर आग लगा देगा।

इससे कई घोड़े जल जायंगे। जलन के घावों को भरने के लिये बन्दरों की चर्बी की मांग पैदा होगी। तब, हम सब मारे जायंगे।' इतनी दूर की बात सोचने के बाद उसने बन्दरों को सलाह दी कि वे अभी से राजगृह का त्याग कर दें। किन्तु उस समय बन्दरों ने उसकी बात को नहीं सुना। राजगृह में उन्हें मीठे-मीठे फल मिलते थे। उन्हें छोड़ कर वे कैसे जाते! उन्होंने वानरराज से कहा कि 'बुढ़ापे के कारण तुम्हारी बुद्धि मन्द पड़ गई है। हम राजपुत्र के प्रेम-व्यवहार और अमृत समान मीठे फलों को छोड़कर जंगल में नहीं जायंगे।' वानरराज ने आंखों में आंसू भर कर कहा - 'मूर्खों! तुम इस लोभ का परिणाम नहीं जानते। यह सुख तुम्हें बहुत महंगा पड़ेगा।' यह कहकर वानरराज स्वयं राजगृह छोड़कर वन में चला गया। उसके जाने के बाद एक दिन वही बात हो गई जिस से वानरराज ने वानरों को सावधान किया था।

एक लोभी मेढा जब रसोई में गया तो नौकर ने जलती लकड़ी उस पर फैंकी। मेढे के बाल जलने लगे। वहाँ से भाग कर वह अश्वशाला में घुस गया। उसकी चिंगारियों से अश्वशाला भी जल गई। कुछ घोड़े आग से जल कर वहीं मर गये। कुछ रस्सी तुड़ाकर शाला से भाग गए। तब, राजा ने पशुचिकित्सा में कुशल वैद्यों को बुलाया और उन्हें आग से जले घोड़ों की चिकित्सा करने के लिये कहा। वैद्यों ने आयुर्वेद शास्त्र देख कर सलाह दी कि जले घावों पर बन्दरों की चर्बी की मरहम बना कर लगाई जाए। राजा ने मरहम बनाने के लिये सब बन्दरों को मारने की आज्ञा दी। सिपाहियों ने सब बन्दरों को पकड़ कर लाठियों और पत्थरों से मार दिया। वानरराज को जब अपने वंश-क्षय का समाचार मिला तो वह बहुत दुःखी हुआ। उसके मन में राजा से बदला लेने की आग भड़क उठी। दिन-रात वह इसी चिन्ता में घुलने लगा। आखिर उसे एक वन मेम ऐसा तालाब मिला जिसके किनारे मनुष्यों के पदचिन्ह थे। उन चिन्हों से मालूम होता था कि इस तालाब में जितने मनुष्य गए, सब मर गये; कोई वापिस नहीं आया। वह समझ गया कि यहाँ अवश्य कोई नरभक्षी मगरमच्छ है। उसका पता लगाने के लिये उसने एक उपाय किया। कमल नाल लेकर उसका एक सिरा उसने तालाब में डाला और दूसरे सिरे को मुख में लगा कर पानी पीना शुरु कर दिया। थोड़ी देर में उसके सामने ही तालाब में से एक कंठहार धारण किये हुए मगरमच्छ निकला। उसने कहा- 'इस तालाब में पानी पीने के लिये आकर कोई वापिस नहीं गया, तूने कमल नाल द्वारा पानी पीने का उपाय करके विलक्षण बुद्धि का परिचय दिया है। मैं तेरी प्रतिभा पर प्रसन्न हूँ। तू जो वर मांगेगा, मैं दूंगा। कोई एक वर मांग ले।'

वानरराज ने पूछा - -'मगरराज! तुम्हारी भक्षण-शक्ति कितनी है?' मगरराज- -'जल में मैं सैंकड़ों, सहस्त्रों पशु या मनुष्यों को खा सकता हूँ; भूमि पर एक गीडड़ भी नहीं।'

वानरराज-'एक राजा से मेरा वैर है। यदि तुम यह कंठहार मुझे दे दो तो मैं उसके सारे परिवार को तालाब में लाकर तुम्हारा भोजन बना सकता हूँ।' मगरराज ने कंठहार दे दिया। वानरराज कंठहार पहनकर राजा के महल में चला गया। उस कंठहार की चमक-दमक से सारा राजमहल जगमगा उठा। राजा ने जब वह कंठहार देखा तो पूछा- 'वानरराज! यह कंठहार तुम्हें कहाँ मिला?' वानरराज ने कहा -'राजन्! यहाँ से दूर वन में एक तालाब है। वहाँ रविवार के दिन सुबह के समय जो गोता लगायगा उसे वह कंठहार मिल जायगा।' राजा ने इच्छा प्रकट की कि वह भी समस्त परिवार तथा दरबारियों समेत उस तालाब में जाकर स्नान करेगा, जिससे सब को एक-एक कंठहार की प्राप्ति हो जायगी।'निश्चित दिन राजा समेत सभी लोग वानरराज के साथ तालाब पर पहुँच गये। किसी को यह न सूझा कि ऐसा कभी संभव नहीं हो सकता। तृष्णा सबको अन्धा बना देती है। सैंकड़ों वाला हज़ारों चाहता है; हज़ारों वाला लाखों की तृष्णा रखता है; लक्षपति करोड़पति बनने की धुन में लगा रहता है। मनुष्य का शरीर जराजीर्ण हो जाता है, लेकिन तृष्णा सदा जवान रहती है। राजा की तृष्णा भी उसे उसके काल के मुख तक ले आई। सुबह होने पर सब लोग जलाशय में प्रवेश करने को तैयार हुए। वानरराज ने राजा से कहा- 'आप थोड़ा ठहर जायं, पहले और लोगों को कंठहार लेने दीजिये। आप मेरे साथ जलाशय में प्रवेश कीजियेगा। हम ऐसे स्थान पर प्रवेश करेंगे जहां सबसे अधिक कंठहार मिलेंगे।' जितने लोग जलाशय में गये, सब डूब गये; कोई ऊपर न आया। उन्हें देरी होती देख राजा ने चिन्तित होकर वानरराज की ओर देखा। वानरराज तुरन्त वृक्ष की ऊँची शाखा पर चढ़कर बोला-'महाराज! तुम्हारे सब बन्धु-बान्धवों को जलाशय में बैठे राक्षस ने खा लिया है। तुमने मेरे कुल का नाश किया था; मैंने तुम्हारा कुल नष्ट कर दिया। मुझे बदला लेना था, ले लिया। जाओ, राजमहल को वापिस चले जाओ।' राजा क्रोध से पागल हो रहा था, किन्तु अब कोई उपाय नहीं था। वानरराज ने सामान्य नीति का पालन किया था। हिंसा का उत्तर प्रतिहिंसा से और दुष्टता का उत्तर दुष्टता से देना ही व्यावहारिक नीति है। राजा के वापस जाने के बाद मगरराज तालाब से निकला। उसने वानरराज की बुद्धिमत्ता की बहुत प्रशंसा की। इससे सीख मिलती है कि लोभ बुद्धि पर परदा डाल देता है।

अंतर्राष्ट्रीय भविष्यवक्ता पंडित रविंद्र आचार्य के जन्मदिन पर आयोजित होंगे विभिन्न कार्यक्रम

जयपुर (संस्कार सृजन)। तारा ज्योतिष साधना केंद्र के अध्यक्ष और अंतर्राष्ट्रीय भविष्यवक्ता पंडित रविंद्र आचार्य के 44वें जन्मदिन पर आगामी 28 जुलाई को विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

पंडित रविंद्र आचार्य ने बताया कि सर्वप्रथम माता पिता का आशीर्वाद लेकर दिन की शुरुआत करेंगे। इसके बाद चौमूं गढ़ गणेश मंदिर में दर्शन कर क्षेत्र की खुशहाली की कामना करेंगे। गौशाला में गायों को हरा चारा खिलाएंगे, वृक्षारोपण करेंगे और विभिन्न मठों पर साधु संतों का आशीर्वाद लेंगे। शाम को गरीबों को भोजन प्रसादी का वितरण किया जाएगा

और 44 दीपक जलाकर जन्मदिन मनाया जाएगा। पंडित रविंद्र आचार्य ने सभी से अपील की है कि विशेष दिवस होने पर हम सभी को समाज सेवा के कार्य करने चाहिए और एक पेड़ जरूर लगाएं जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहे।

देवगिरि साहित्य एवं शोध संस्थान ने मनाया गुरु पूर्णिमा उत्सव

दौसा (संस्कार सृजन)। देवगिरि साहित्य एवं शोध संस्थान दौसा द्वारा वन महोत्सव के अंतर्गत महात्मा गांधी स्कूल रेलवे स्टेशन दौसा में पर्यावरण जागरूकता, बाल साहित्य वितरण के साथ अंधकार रूपी अज्ञान का शमन कर ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाने वाले गुरुओं का सम्मान किया गया।

देवगिरि साहित्य एवं शोध संस्थान की अध्यक्ष डॉ निर्मला शर्मा द्वारा बताया गया कि वन महोत्सव की श्रृंखला में महात्मा गांधी रेलवे स्कूल दौसा में बालक बालिकाओं को गुरु का महत्व बताते हुए पर्यावरण के प्रती जागरूक करने हेतु परिचर्चा रखी गई। साथ ही बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकें एवं पत्र पत्रिकाएं वितरित की गई।

मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व प्राचार्य रेलवे स्कूल एवं पर्यावरण प्रेमी रामबाबू गुप्ता तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी और शिक्षाविद सुशील शर्मा, साहित्यकार एवं वर्तमान प्राचार्य रवींद्र चतुर्वेदी द्वारा मां शारदे के समक्ष दीप प्रज्वलित कर एवं

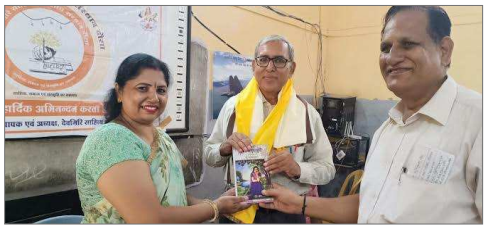

माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

संस्थान द्वारा रामबाबू गुप्ता तथा रवींद्र चतुर्वेदी का शॉल, संस्थान का दुपट्टा तथा पुस्तक प्रदान कर सम्मान किया गया। साथ ही गौ सेवक सुशील शर्मा को पर्यावरण की दिशा में विशेष कार्य करने हेतु सम्मानित किया गया।

अतिथियों ने संबोधन में कम से कम एक पेड़ लगाने तथा उनके पोषण संरक्षण की बात कही गई। साथ ही गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु तथा शिष्य के संबंधों पर बोलते हुए कहा कि गुरू पूर्णिमा गुरू शिष्य के मध्य स्थापित पवित्र बंधन का सम्मान करने का दिन है। यह हमारे जीवन में ज्ञान, बुद्धि और मार्गदर्शन के महत्व की याद दिलाता है।

कार्यक्रम का संचालन सीताराम शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में स्नेहा शर्मा, शिवदयाल शर्मा,नेहा शर्मा, मनीष शर्मा, मुरलीधर मीना, गोपाललाल शर्मा आदि भी शामिल रहे।

10 साल पुरानी कार-जीप का रजिस्ट्रेशन कराना हुआ महंगा, दुपहिया पर दोगुना टैक्स

जयपुर (संस्कार सृजन)। दिल्ली एनसीएआर क्षेत्र की 10 साल पुरानी कार-जीप का प्रदेश में अब रजिस्ट्रेशन कराना महंगा हो गया है। बढ़ते पॉल्यूशन की वजह से सरकार ने इन गाड़ियों पर दी जा रही छूट में कमी कर दी है। छूट अधिक होने की वजह से राजस्थानी सहित अन्य जिलों में 10 साल पुरानी गाड़ियों की बिक्री अचानक बढ़ गई थी।

पहले दिल्ली एनसीआर से पुरानी गाड़ियों को लाने पर परिवहन विभाग द्वारा टैक्स में 80 प्रतिशत तक छूट दे रखी थी। अब बजट में इस घटाकर महज 25 फीसदी कर दी है। बजट में टैक्स लगाने के बाद दुपहिया वाहन महंगे हो गए हैं। पहले दुपहिया वाहनों पर 4 प्रतिशत टैक्स था। अब इसे बढ़ाकर कर 8 प्रतिशत कर दिया है। ऐसे में 1 लाख रुपए की बाइक पर अब 8 हजार रुपए टैक्स लगेगा। पहले 4 हजार रुपए लगता था। वहीं 1200 सीसी की गाड़ियों पर टैक्स में 2 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर दी है। 1200 सीसी से अधिक क्षमता की डीजल कार पर अब 12 फीसदी टैक्स लगेगा।

दूसरी तरफ स्टेज कैरिज बसों के टैक्स को राहत दी है। पहले 504 रुपए प्रति सीट प्रति माह था, अब 400 रुपए किया गया है। विभिन्न लोक परिवहन, स्टेज कैरिज, ग्रामीण रूट की बसों के लिए भी छूट दी गई है, जो बस संचालक 11 माह तक नियमित रूप से टैक्स भरेंगे, उन्हें 12वें माह में पहले 25 फीसदी छूट मिलती थी, अब 50 फीसदी मिलेगी।

शिक्षक विजय मेहंदी को शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में मिला दोहरा सम्मान

उत्तरप्रदेश (संस्कार सृजन)। जौनपुर जनपद का निरंतर साहित्य गौरव बढ़ा रहे मड़ियाहूं विकास खण्ड के कविहृदय शिक्षक विजय मेहंदी वर्तमान में जिले के बरसठी विकास खण्ड के प्राथमिक विद्यालय मंगरी में कार्यरत हैं । इनको शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में निरंतर नवाचार में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए एक साथ संत पाल सिंह राठौड़ स्मृति राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान 2024 एवं भारतीय हिन्दी सेवी सम्मान से विभूषित किया गया है।

जानकारी के लिए आपको बता दें कि उक्त राष्ट्रीय कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले के प्रभाकर मेमोरियल स्काउट भवन में प्रख्यात शिक्षाविद राम बहादुर पाण्डेय की अध्यक्षता में जनदृष्टि व्यवस्था सुधार मिशन द्वारा पल्लवी शर्मा के कुशल संयोजन में किया गया।

जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के शिक्षा साहित्य एवं सामाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे नवाचारी शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इसी क्रम में मड़ियाहूं विकास खण्ड के मूल निवासी विजय मेहंदी को भी उक्त सम्मानों से नवाजा गया है।

विजय मेहंदी की इस उपलब्धि से ब्लॉक एवं जनपद वासियों में खुशी की लहर है। मेहंदी को शिक्षण एवं साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से पूर्व में भी कई बार नवाजा जा चुका है।

हिन्दुस्तान स्काउट एण्ड गाइड के पदाधिकारियों ने शिक्षा मंत्री मदन दिलावर का किया भव्य सम्मान

जयपुर(संस्कार सृजन)। स्काउट्स एवं गाइड्स जिला मुख्यालय जयपुर के तत्वाधान में राज्य सचिव नरेन्द्र ओदिच्य के नेतृत्व में तथा विजय दाधीच राज्य समन्वयक सचिव और राज्य संगठन आयुक्त रिपुदमन सिंह, कविता जैन राज्य मुख्यालय गाइड के सानिध्य में सिविल लाइन्स जयपुर में शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से शिष्टाचार भेंट की । संभाग आयुक्त मनोज त्रिवेदी, जिला सचिव चौथमल कुमावत, जिला मुख्यालय आयुक्त सुमन शर्मा, जिला मुख्यालय प्रभारी लोकेश सेरावत, जिला संगठन आयुक्त अजय कुमावत व रुपेश कुमार मीणा, रमेश बुनकर, परमेश्वरी बुनकर, नैना मीणा, सुनील सैनी, ब्लॉक प्रभारी कृष्ण कुमार मीणा पदाधिकारियों ने शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को स्कार्फ, माला पहनाकर एवं साफा बंधवाकर सम्मान किया गया । इस

मौके पर विजय दाधीज ने बताया की राज्य सरकार ने हिन्दुस्तान स्काउट्स एवं गाइड्स को चार करोड़ रुपये आवंटित करने पर आभार व्यक्त किया तथा हिन्दुस्तान स्काउट एण्ड गाइड द्वारा किये जा रहे शिविरों के कार्यों की जानकारी दी एवं जिले में आयोजित उत्कर्ष कार्यों, आगामी वर्षों में किये जाने की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया।

जिला सचिव चौथमल कुमावत एवं मनोज त्रिवेदी संभाग आयुक्त ने बताया की हिन्दुस्तान स्काउट्स गाइड्स द्वारा देशहित में सेवाभाव व राष्ट्रहित के लिए समर्पित भाव रखने की जानकारी दी ताकि देश की युवा पीढ़ी में सांस्कृतिक भावों की अनुभूति से अभिभूत हो सकें।

भामाशाहों ने स्कूल में किया वाटर कूलर भेंट

जयपुर (संस्कार सृजन)। ग्राम पंचायत मण्डा-भिण्डा के तीजा वाली ढाणी स्थित स्व.सत्यनारायण यादव की पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी संतोष देवी, पुत्र राम प्रकाश यादव, शंकर लाल, पुत्र वधू मम्मू यादव पंचायत शिक्षका ने स्कूल में वाटर कूलर भेंट किया है। इस दौरान पूर्व विधायक रामलाल शर्मा, भामाशाह व जनप्रतिनिधियों ने विद्यालय परिसर में मां शारदा के चित्र पर माल्यार्पण एवं द्वीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । पूर्व विधायक शर्मा ने वाटर कूलर का फीता काटकर शुभारम्भ किया । इस अवसर पर परमानंद, सूरजमल , बाबूलाल , उमराव, धर्मेंद्र , श्रीराम , संतोष , बलराम, सीताराम , हरिहर शर्मा , रामकिशोर , रामलाल , जय राम , गोपाल , रिंकू जोशी , छीतर मल जांगिड़ ,

भगवान सहाय यादव सहित समस्त स्टाफ व अन्य ग्रामीणजन उपस्थित रहे ।

वन महोत्सव 2024 के पोस्टर का हुआ विमोचन

दौसा (संस्कार सृजन)। देवगिरि साहित्य एवं शोध संस्थान दौसा द्वारा आयोजित वन महोत्सव का जिला कलेक्टर देवेंद्र कुमार द्वारा पोस्टर विमोचन किया गया। संस्थान की अध्यक्ष डॉ. निर्मला शर्मा ने बताया कि जुलाई माह में चलने वाले वन महोत्सव 2024 का आयोजन संस्थान द्वारा किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत अनेक सामाजिक एवं शैक्षिणक संस्थाओं में पौधारोपण, पर्यावरण जागरूकता एवं बाल साहित्य का वितरण किया जाएगा। डॉ. शर्मा के अनुसार केवल वृक्ष लगाना ही काफी नहीं है। उसका संरक्षण तथा जागरूकता भी आवश्यक है। पोस्टर विमोचन के समय मुख्य वन विभाग अधिकारी अजीत उचोई तथा सी ई ओ धारा सिंह मीणा भी मौजूद रहे। संस्थान द्वारा जिला कलेक्टर देवेंद्र कुमार एवं उपस्थित पदाधिकारियों को ससम्मान आमंत्रण पत्र देकर कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया ।

कावड़ यात्रा का गढ़ गणेश मंदिर में किया पोस्टर विमोचन

चौमूं (संस्कार सृजन)। शहर के प्राचीन गढ़ गणेश मंदिर में बाबा मालेश्वर महादेव कावड़ यात्रा का पोस्टर विमोचन किया गया एवं गणेश निमंत्रण दिया गया।

कावड़िया श्री मालेश्वर नाथ महादेव मंदिर से कावड़ लेकर आएंगे और चौमूं शहर के प्राचीन श्री श्याम मंदिर एवं भोलेनाथ महादेव मंदिर में जलाभिषेक करेंगे। 5 अगस्त 2024 सोमवार को कावड़ यात्रा का आयोजन होगा। गणेश निमंत्रण एवं पोस्टर विमोचन कार्यक्रम का आयोजन प्राचीन श्री गढ़ गणेश मंदिर महाराज के सानिध्य में हुआ। इस दौरान

एमवीएस फाउंडेशन ट्रस्ट अध्यक्ष कन्हैयालाल सैनी, उपाध्यक्ष रामकिशोर सैनी, शंकर लाल सैनी, राम नारायण सैनी, मुकेश सैनी, अजय सैनी, रोशन सैनी, मुकेश कुमार सैनी आदि भोले नाथ के भक्त उपस्थित रहे ।

RNI N0. - RAJHIN/2021/80841
www.sanskarnews.page
EMAIL-sanskarsrijan21@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक राम गोपाल सैनी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43 ए, माली कॉलोनी, चांदपोल, जयपुर से मुद्रित तथा वार्ड नं.1, सामोद रोड़ नीमड़ी, ग्राम-मोरीजा, तहसील-चौमूँ, जिला-जयपुर से प्रकाशित।

उपसंपादक- रजनीश सैनी